Press note

जगदलपुर। संविधान निर्माता बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर की 134वीं जयंती के उपलक्ष्य में शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

मंगलवार को आयोजित विशेष व्याख्यान में कुलपति प्रो. एमके श्रीवास्तव ने कहा कि हम सभी को बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर के समाज सुधारक, संविधान विशेषज्ञ के अद्वितीय उपलब्धि और योगदानों के साथ स्कॉलर के रूप में उनकी क्षमता और प्राप्ति को भी जानने का प्रयास करना चाहिए। प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि सामाजिक न्याय और समानता के प्रणेता डॉ. अंबेडकर ने संघर्ष से अपने जीवन को आदर्शस्वरूप और महान बनाया।

प्रमुख वक्ता एडवोकेट मनबोध बघेल ने कहा कि डॉ. अंबेडकर पिता की तरह समाज और देश का पालन-पोषण किया और उसके लिए सही संविधान बनाया। साथ ही सही राह पर चलने को समझाने का प्रयास भी किया इसलिए वे बाबा कहलाए। वहीं बेहतर जीवन शैली और बड़े उद्देश्य के लिए जीने के कारण वे साहेब कहलाए।

श्री बघेल ने कहा कि डॉ. अंबेडकर चलती-फिरती लाईब्रेरी थे। उन्होंने करीब साठ देशों के संविधान का अध्ययन किया। उन्होंने बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय की बातें कीं। तब जाकर उन्होंने संविधान रूपी व्यवस्थित नियमावली बनाई। आज देश में संविधान से बड़ा कुछ नहीं है। संविधान में सारी समस्याओं के समाधान के लिए जादुई बाते हैं। अपने उद्बोधन से पूर्व श्री बघेल ने संविधान की प्रस्तावना का समवेत पाठ कराया।

अपने स्वागत उद्बोधन में आयोजन के संयोजक डॉ. सजीवन कुमार ने कहा कि डॉ. अंबेडकर के संविधान के कारण हम सभी एक सूत्र में बंधे हैं। हम सभी को एक बार उनके विचार संदेश को जरूर पढ़ना चाहिए। संविधान के ज्ञान नहीं होने के कारण हम अक्सर गलतियां कर जाते हैं।

डॉ. सुकृता तिर्की ने कहा कि डॉ. अंबेडकर महिला समाज के उद्धारक हैं। महिलाओं ने समाज में जो भी मुकाम हासिल किया है उसमें बाबा साहेब के संवैधानिक उपबंधों का योगदान है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ. बीएल साहू ने कहा कि संविधान के जाने बिना हमारी शिक्षा अधूरी है। डॉ. सोहन कुमार मिश्रा ने आभार उद्बोधन दिया। इस अवसर पर विद्यार्थियों के डॉ. अंबेडकर के जीवन पर आधारित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

शहीद महेन्द्र कर्मा विश्वविद्यालय, बस्तर, जगदलपुर(छ.ग.)
संविधान निर्माता भारत रत्न बाबा साहेब
डॉ. भीमराव अंबेडकर जंयती
माल्यार्पण, व्याख्यान एवं प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम